अभिचार एवं तिमिर इन्द्रजाल कहा जाता है। इस तामसिक विद्या का अभ्यास करने वाले मनुष्य इसे आध्यात्मिकता समझते हैं। परन्तु वास्तव में ये क्रियाएँ पूर्णतया भौतिक हैं। इसी प्रकार जो अनन्य भाव से श्रीभगवान् की आराधना के परायण है, वह शुद्ध भक्त निस्सन्देह वैकुण्ठ और कृष्णलोक को प्राप्त हो जाता है। इस महत्त्वपूर्ण श्लोक से यह सुगमतापूर्वक समझा जा सकता है कि यदि देवोपासना से स्वर्ग-प्राप्ति हो जाती है, पितरों की पूजा से पितृलोक सुलभ हो जाता है और तिमिर इन्द्रजाल के अभ्यास से प्रेतलोक मिलता है, तो शुद्ध भक्त श्रीकृष्ण के अथवा विष्णु के लोक को प्राप्त क्यों नहीं हो सकता? दुर्भाग्यवश, बहुत से मनुष्यों को श्रीकृष्ण और विष्णु के इन अलौकिक धामों की जानकारी नहीं है और इसी कारण वे बारम्बार संसार में गिरते हैं। निर्विशेषवादी तो 'ब्रह्मज्योति' से भी गिर जाते हैं। अतएव कृष्णभावनामृत आन्दोलन सम्पूर्ण मानव समाज में इस परम कल्याणकारी ज्ञान का मुक्त वितरण कर रहा है कि **हरे कृष्ण** महामन्त्र का कीर्तन करने मात्र से मनुष्य इस जीवन को सार्थक करते हुए अपने घर—भगवान् के पास लौट सकता है।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।२६।।

पत्रम् =पत्ता; **पुष्पम्** =पुष्प; **फलम्** =फल; **तोयम्** =जल; **यः** =जो; **मे** =मेरे लिए; **भक्त्या** =भक्तिभाव से; **प्रयच्छति** =अर्पण करता है; **तत्** =वह; **अहम्** =मैं; **भक्ति-उपहृतम्** =भक्तिभाव से अर्पण किया हुआ; **अश्नामि** =खाता हूँ; **प्रयतात्मनः** = शुद्धमति भक्त का।

अनुवाद

भक्त प्रेमभक्ति के साथ पत्र, पुष्प, फल, जल आदि जो कुछ भी मेरे अर्पण करता है, उसे मैं प्रीतिसहित खाता हूँ।।२६।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण पूर्ववर्ती श्लोकों में स्थापित कर चुके हैं कि वे यज्ञों के एकमात्र भोक्ता, परमेश्वर और यथार्थ प्रयोजन हैं। इस श्लोक में उन्होंने बताया है कि कौन-कौन सा समर्पण उन्हें प्रिय है। यदि कोई अन्तःकरण की शुद्धि और जीवन के परम प्रयोजन—प्रेममयी भगवत्सेवा की प्राप्ति के लिए भक्तियोग में तत्पर होने का अभिलाषी हो, तो उसे यह जानना चाहिए कि श्रीभगवान् उससे क्या चाहते हैं। श्रीकृष्ण का प्रेमी उनके लिये उन्हीं पदार्थों का अर्पण करेगा, जो उनके मन के अनुकूल हों; अवाञ्छित अथवा प्रतिकूल वस्तु का अर्पण वह कभी नहीं करेगा। अस्तु, माँस, मछली और अण्डे श्रीकृष्ण के भोग के योग्य नहीं हैं। यदि श्रीकृष्ण इन पदार्थों का अर्पण चाहते, तो वे ऐसा कह देते। इसके विपरीत, उन्होंने स्पष्ट किया है कि उनके लिए पत्र, पुष्प, फल, जल इत्यादि पदार्थों का ही अर्पण किया जाय। इस प्रकार के भोग के सम्बन्ध में उनका कहना है कि 'मैं उसे स्वीकार करूँगा।' अतः यह